'हमारे दोनों महाकाव्यों में स्वतंत्रता के प्रेरक तत्व भी समाहित हैं'

साहित्य अकादमी की तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

नई दिल्ली, 14 मार्च (नवोदय टाइम्स) : साहित्य अकादमी द्वारा छह दिवसीय साहित्योत्सव के चौथे दिन महाकाव्यों की स्मृतियां, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र निर्माण विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका उद्घाटन वक्तव्य अकादमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया। बीज वक्तव्य प्रख्यात सामाजिक सिद्धांतकार एवं आलोचक आशीष नंदी ने दिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने की और समापन वक्तव्य उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने दिया।

इस दौरान विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि हमारे दोनों महाकाव्य रामायण और महाभारत में हमारी स्वतंत्रता के प्रेरक तत्व भी समाहित है। महात्मा गांधी जहां रामायण (तुलसी का रामचरित मानस) से प्रेरणा लेते हैं तो बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिनचंद्र पाल, गीता से प्रेरणा ले रहे है, जोकि महाभारत का ही एक हिस्सा है, जबकि बीज वक्तव्य देते हुए आशीष नंदी ने कहा कि समाज की आंतरिक संवेदना हमारे महाकाव्यों में ही संरक्षित है। हमारे महाकाव्य जीवन के प्रति ज्यादा विविधता के साथ सोचने का अवसर देते है। अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि इन दोनों महाकाव्यों में हमारी जातीय स्मृतियां संरक्षित है। समापन वक्तव्य देते हुए अकादमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा, भारत की आंतरिकता इन दोनों महाकाव्यों में बसती है। संगोष्ठी के 2 अन्य सत्र हरीश त्रिवेदी एवं एसआर भट्ट की अध्यक्षता में संपन्न हुए।

इस दौरान नाट्य लेखन पर हुई परिचर्चा का उद्घाटन अभिनेता मोहन अगाशे ने किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि नाटक लिखना और इसको प्रस्तुत करना दोनों अलग-अलग है। उन्होंने शब्दों की पूरी यात्रा का खाका खींचते हुए कहा कि अब शब्द हमारे साथ लगातार बने रहते हैं और उनसे हमें कितना और कैसा संबंध रखना है यह कोई और निर्धारित करता है। अन्य सत्रों में दयाप्रकाश सिन्हा और टीएम अब्रहाम की अध्यक्षता में चंदन सेन, केवाई नारायणस्वामी, अभिराम भड़कमकर, दीवान सिंह बजेली, डी. श्रीनिवास ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।